International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 09-06-2026, Accepted: 09-07-2026, Published: 24-07-2026
Volume 12, Issue 3, 2026, Page No. 28-32

प्रतिभा राय के 'परिचय' और 'शिलापद्म उपन्यास में नारी यथार्थता

अलकाराणी त्रिपाठी
अध्यापक, हिंदी विभाग, राजेंद्र विश्वविद्यालय, बलांगीर, ओडिशा, भारत
DOI: https://doi.org/10.66856/ijhr.2026.12.3.12196

सारांश
शिव के अर्धनारीश्वर रूप के स्वरूप नारी और पुरुष एक दूसरे के पूरक हैं। उत्सर्ग भाव का प्राधान्य ही नारी स्वरूप है परंतु जब बात उसके स्वाभिमान की हो वह चंडी स्वरूपा भी बन सकती है। जिस प्रकार अपने प्रिय जनों के लिए उत्सर्ग भावना उसका स्वाभाविक गुण है उसी प्रकार अपने स्वाभिमान की रक्षा के लिए खड्ग धारण भी उसका स्वाभाविक गुण है। इन्हीं गुणों का सफल चित्रायन प्रतिभा राय ने अपने प्रारंभिक रचना 'परिचय' तथा ओड़िशा के स्थापत्य कला को समर्पित रचना 'शीलापदम' में किया है। 'परिचय' में जंगल की अबोध किशोरी भावावेग के वश में शहर के अनजान 'बाबू' के सामने स्वयं को समर्पित कर देती है, तथा माता, पत्नी, पुत्री के रूप में अपने परिवार की सुरक्षा के लिए घृणित कार्य तक करने के लिए कुंठा बोध नहीं करती परंतु अपने स्वाभिमान की रक्षा के लिए उसी 'बाबू' के सामने चंडी रूप धारण कर लेती है। 'शिलापद्म' की पढ़ी–लिखी शोधार्थी स्वच्छंद होते हुए भी स्व–संस्कारों में बंधी है तथा मंदिर निर्माण में व्यस्त अपने प्रिय के प्रतीक्षा में 'शिल्पीप्रिया' उस समय के नारी जीवन की दयनीयता का प्रतिनिधित्व करती है। नारी सर्वसंहा तब तक है जब तक उसका सम्मान है जब उसके स्वाभिमान को चोट पहुंचे वह विद्रोहिणी बन जाती है।

मूल शब्दः थर्ड जेंडर, जैविक संरचना, तीसरा मानवीय प्राणी, अस्मिता

एक दूसरे के पूरक ईश्वर के दो सृष्टि नारी और पुरुष। परंतु समाज में एक दूसरे के पूरक के रूप में रहते नहीं हैं । पुरुष अपने शारीरिक बल के आधार पर स्त्री को अपने अधीन रखता है। प्रकृति का ही नियम है क्रिया का समान एवं विपरीत प्रतिक्रिया। नारी की असम्मान होने के कारण ही प्रतिक्रिया के रूप में नारी ने अपने अस्थित्व और अधिकार के लिए विद्रोह किया। फल स्वरूप पूरे विष्व में नारीवादी चिंतन लेखन एवं विभिन्न आंदोलनों ने रूप लिया। इन्हीं के के माध्यम से वह अपनी स्थिति और अधिकारों के प्रति सजग एवं जागरूक हो रही है। अपने सम्मान पूर्वक जीवन जीने का अधिकार मांग रही है। अनेक पत्रिकाएं साहित्य चिंतन के लिए सहायता दे रहे हैं।" स्त्री लेखन स्त्री की मानवीय अस्मिता के लिए लड़ी जाने वाली वैचारिक लड़ाई है। इसका अभिप्रेत पुरुष को पछाड़कर अपने वर्चस्व का परचम फहराना नहीं, बल्कि समाज में स्त्री–पुरुष के लैंगिक विभाजन और पहचान पर आधारित है। पितृसत्तात्मक व्यवस्था का कोई बेहतर समतामूलक मानवीय विकल्प खोजना है। यह एक सर्जनात्मक आंदोलन है जो स्त्री–पुरुष दोनों को बध्द भूमिकाओं और रूढ़ छवियों से मुक्त कर आत्मविश्लेषण एवं आत्म परिष्कार का संवेदनात्मक आधार देता है।"[1]

शास्त्रों में पढ़े जाने वाले ज्ञान को मानव वास्तविक जीवन में प्रतिफलित नहीं कर पा रहा है। समझ नहीं पा रहा दशभुजा दुर्गा के दस हाथ नारी के दस क्षमताओं का प्रतीक है। नवदुर्गा के नौ रूप नारी के नौ गुणों के प्रतीक हैं । इन समस्त रूपों और गुणों का समाहार नारी है। ये बात अलग है कि किस में किस रूप और गुण की प्रतिति अधिक है। परंतु संपूर्ण नारी जाति में यह रूप और गुण स्वाभाविक रूप में समाहित है। नारी पुरुष समानता हमारे पुराणों की उक्ति है न कि पश्चिमागत विचारधारा। अर्धनारीष्वर इसका प्रमाण है।

"अजीब विडंबना है। असमानता से कोसों–कोसों दूर नर–नारी समता का आदर्श जीवन दर्शन 'अर्धनारीष्वर' निर्विवाद रूप से सबसे पहले भारत में विकसित हुआ। पुरुष आधा नारी बने, नारी आधा पुरुष, केवल तभी वे परस्पर पूरक हो सकते हैं, किंतु पुरुष वर्चस्विता पहले भी इस जीवन–दर्शन को अहं के चलते आचरित करने में अनिच्छुक रही।"[2]

नारी इस समानता पर विश्वास रखती है और समाज से भी वही अपेक्षा रखती है। परंतु जब अधिकार हनन सीमा लांघ जाता है तब से विद्रोह आरंभ हो जाता है।".. वह निषेध रूप तत्व ही नारी है।.. जहां कहीं अपने आप को उत्सर्ग करने की, अपने आप को खपा देने की भावना प्रधान है वहीं नारी है।"[3] नारी अपने आप को परिवार के नाम पर समाज के नाम पर देश के नाम पर उत्सर्ग कर देती है परंतु जब उसकी स्वाभिमान को ठेस पहुंचता है तो उसका स्वाभाविक चंडी रूप बाहर आ जाता है। नारी सब कुछ सह सकती है लेकिन अपने स्वाभिमान पर चोट नहीं। समाज चाहे पढ़ा लिखा हो, सहरी हो, ग्रामीण या वनवासी हो, प्राचीन हो या आधुनिक हो किसी भी समाज में नारी को उसके स्वाभाविक गुणों से परिचित कराने की आवश्यकता नहीं है। आदर्शवादिता के गुरुचाप के नीचे नारी के मन के भावों को, उसके पीड़ित मन को, उसके विचलित मन को, उसके असंतुष्ट इच्छाओं को पहले संस्कार के नाम पर सामने लाया नहीं जाता था परंतु आधुनिक समाज में नारी से अपने सम्मान तथा अधिकार का इस प्रकार हत्या होते देख चुप नहीं रहा गया। साहित्य में नारी के इन अधिकारों, उसके मन स्थिति, उसकी इच्छाओं, कुंठाओं उसके प्रति अत्याचार का खुला वर्णन होने लगा। पुरुषों ने जब नारी के प्रति हो रहे अत्याचारों के प्रति सचेत होकर उनका वर्णन किया बस सहानुभूति के आधार पर अनुमान लगाकर उसको चित्रित किया। परंतु नारी ने जब अपने लिए आवाज उठाई तो रोम–रोम में अनुभव किए हुए क्षणों को शब्दों में उतारा वह पूरे नारी समाज की आवाज बन गई।

नारी केवल आदर्श की मूर्ति नहीं है त्याग की मूर्ति नहीं है केवल कर्तव्य निर्वाह करने के लिए उसका जन्म नहीं हुआ है। वह भी हाड़ मांस की एक मनुष्य है। उसके अंदर भी इच्छाएं हैं कामनाएं हैं और उन सबको पूरा करने का अधिकार उसे है। आधुनिक युग की लेखिकाएं इस यथार्थता को मुखर रूप से अपने साहित्य में वर्णित करने में कभी भी पीछे नहीं हटीं। उसी का दो उदाहरण मैं अभी प्रस्तुत करना चाहती हूं। ओडिआ भाषा की शारदा वर प्राप्त लेखिका डॉक्टर प्रतिभा राय का प्रारंभिक उपन्यास 'परिचय' और ओड़िआ साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत, ओड़िशा के कला और स्थापत्य को समर्पित रचना 'शीलापदम'।

दोनों उपन्यासों में वर्णित स्त्री परिस्थिति एक दूसरे से पूर्णतः भिन्न है 'परिचय' में है वनवासी समाज में रहने वाली 'मखी' और 'शीलापद्म' में शोधार्थी 'प्राचीतारा' तथा कोणार्क निर्माण के समय पति के लिए प्रतीक्षारत ग्रामीण किशोरी 'चंद्रभागा'। तीन अलग–अलग समय खंडों में नारी जीवन के यथार्थ का प्रतिनिधित्व करती हुई इन तीनों का जीवन अलग होते हुए भी एक जैसा है और इन्हीं के माध्यम से पूरे नारी समाज का।

अशिक्षित समाज की विवशता

चाहे 'परिचय' उपन्यास में प्रस्तुत समाज, जंगलों के बीच बसा एक अवहेलित समाज हो या 'शिलापद्म' उपन्यास की फूल बेचने वाली चित्रा या जगन्नाथ की बहन गौरी हो। समाज अलग, परिवेश अलग, परिस्थिति भी अलग पर परिणति एक जैसी ही है।' परिचय' उपन्यास में जहां सरल जनमानस जंगल विभाग के डाक–बंगले में ठहरनेवाले अफसरों को भगवान मानते थे और भोग में उनकी प्रिय वस्तु किशोरी और युवतियों को चढ़ाते। वहीं सरला किशोरी कुछ समझती नहीं, उसके मन में भर दिया जाता है कि अगर 'बाबू' खुस होंगे तो जंगल की किसमत बदल जाएगी। उनके लिए किसी 'बाबु' की एक रात की संगिनी बनना लज्जाजनक नहीं था कारण वे जो भी कर रहे थे अपने जंगल की भलाई के लिए कर रहे थे। उन्हें पता भी नहीं था जिन्हें वो लोग देवता मान रहे थे वे मनुष्य कहलाने के लायक भी नहीं थे। जंगल में आ कर अपने अंदर के पशु को शांत करते थे साथ में जंगल को भी लूटते थे। जिसका भाग्य कमजोर होता मखि की बड़ी बहन छाया जैसे उनके पशुत्व का शिकार बन जाती और पिछे रह जाता उसका खिन्न शरीर।

"ବଙ୍ଗଳା କୋଠରୀର କାର୍ପେଟ ଉପରେ ରକ୍ତ – ମନ୍ଦାର ର ଛିନ୍ନ ସ୍ତବକ ଟିଏ ଭଳି ଛାୟା ର ରକ୍ତାକ୍ତ, ବିକ୍ଷତ, ନିର୍ଜୀବ, ଉଲଗ୍ନ ଶରୀର ଟା ଛିନ୍ନ ଛତ୍ର ହୋଇ ପଡ଼ି ରହିଛି। ନିଜ ଆଦରଣୀୟା ସୁକୁମାରୀ ଝିଅ ଟିର ସେ ବିଭତ୍ସ ହୃଦୟବିଦାରକ ରକ୍ତାକ୍ତ ଶରୀର ଟିକୁ ଚାହିଁ ପାରିଲା ନାହିଁ ନବଘନ।"[4]

(बंगले की कोठरी के कारपेट के उपर रक्ताभ जबाकुसुम के नह्मी कली जैसे छाया का खून से लथपथ,क्षत–विक्षत, निर्जीव, निर्वस्त्र शरीर बिखरा हुआ पड़ा था। अपनी लाड़ली का यह विभत्स ह्रदयविदारक रक्ताक्त शरीर को देखने का साहस नवघन में नहीं था")

यह घटना उसके माता–पिता के लिए नया नहीं था बस आज उनकी बारी थी –

"ଏ ଯେମିତି ଗୋଟାଏ ନିତିଦିନିଆ ଦୁର୍ଘଟଣା।୩୩ ଜଙ୍ଗଲି ହିଂସ୍ର ପଶୁଙ୍କର ଆକ୍ରମଣ, ଆଉ ସହରୀ ସଭ୍ୟ ଭଦ୍ର ବାବୁମାନଙ୍କର ଆଚରଣ ଦୁଇଟା ଯାକ ଯେମିତି ଏକ କଥା। ପଶୁ ବିରୋଧ ରେ କିଛି କରି ହୁଏନା।"[5]

(जैसे कि यह एक रोज मार्ग की एक दुर्घटना हो।३ जंगली हिंस्र पशुओं का आक्रमण और शहरी सभ्य बाबूओं का आचरण दोनों जैसे एक ही बात है । पशुओं के विरोध में कुछ किया नहीं जा सकता)

'शिलापद्म' उपन्यास में कोणार्क के पास रहने वाली गाँव की लड़की चित्रा। कोई बड़ा सपना नहीं था उसका। फूल बेच कर कुछ पैसे जमा कर पाएगी तो उसका विवाह हो पाएगा। विवाह के सुनहले सपनों से चित्रा की आंखें रंगीन हो जाती थीं। कुछ पैसे जमा हो जाएंगे तो दहेज की व्यवस्था हो पाएगी वरना बिना दहेज के कोई लड़का शादी कैसे करेगा। उनकी क्षमता हो या ना हो दहेज तो देनी ही पड़ेगी वरना लड़की की शादी नहीं हो सकती । इसके लिए वह रोज कोणार्क के सूर्य मंदिर के पास फुल बेचती थी दहेज के लिए पैसे जमा करती थी फीर भी अपने भावी ससुराल में सुख को लेकर संदेह में थी, अपने इस आशंका को व्यक्त करते हुए प्राची से कहती है,

"ବାପାର ବେକ ମୋଡ଼ି ଏତେ ଯୌତୁକ ନେଇ ମତେ ଯିଏ ଘରକୁ ନେଉଛନ୍ତି ସେଠି ମୁଁ ବଞ୍ଚିବି ତ?"[6]

(बाबा का गला दबा कर इतना दहेज ले कर जो मुझे अपने घर ले जा रहे हैं, वहां मैं बचूंगी तो?)

दूसरी और जगन्नाथ की बहन गौरी। जगन्नाथ मेधावी छात्र था परंतु गरीब था । उसके बहन का सबसे बड़ा अपराध था कि वह सुंदर थी। इसी के दंड स्वरूप एक तथा कथित समाजसेवी झूठे सहानुभूति के आड़ में तीन दिनों तक जगन्नाथ के पीठ पीछे उसे शहर में अलग–अलग ग्राहकों को बेचता रहा । तीन दिन बाद जब वह बेचारी घर आई जीवित रहने का नैतिक साहस खो चुकी थी। परिणामस्वरूप उसका शव गांव के तालाब में तैर रहा था।

क्या अपराध था इन लोगों का, बस यही न की ये लड़कियां थीं। पुरुष से कमजोर। पुरुष के ऊपर निर्भर जिस कारण पुरुष के भीतर के पशु से उनको सामना करना करना पड़ा। भले ही इन उपन्यासों का देश काल अलग है परंतु न केवल इन की घटनाएं अपितु साम्प्रतिक समाज की परिस्थिति इन से अलग नहीं है। आज भी स्त्री समाज को इसी डर के साथ जीना पड़ता है।

अव्यवस्थित विवाह व्यवस्था

हमारे समाज में विवाह ही एक लड़की की चरम परिस्थिति है। चाहे परिवार अनपढ़ हो या पढा लिखा। बेमेल विवाह के कारण एक स्त्री नारकीय जीवन जीने पर विवश हो जाती है। विवाह के पश्चात् पुरुष के जीवन पर तो कोई प्रभाव नहीं पड़ता किंतु स्त्री का जीवन पूरी तरह से परिवर्तित हो जाता है। है जैसे 'शिलापद्म' उपन्यास में प्राची का हो गया । दशवीं के पढाई के बाद आगे की पढ़ाई की जरुरत नहीं है बोल कर पढ़ाई रोक दी गई। अठारह बताकर पंद्रह के उम्र में विवाह कर दिया गया, प्रथम रात्रि में जब उसे पति जगन्नाथ ने देखा चौंक कर पुछा,

" ତମର ବୟସ କେତେ?"
ସରଳ କଣ୍ଠ ରେ ପ୍ରତିପ୍ରଭା ଉତ୍ତର ଦେଲା " ପନ୍ଦର।"
"ଛି, ତମେ ଛୋଟ ପିଲା ଟି ବୋଲି ଜାଣିଥିଲେ ମୁଁ ତମକୁ ସ୍ପର୍ଶ କରି ନ ଥାନ୍ତି। ତମର ମଉସା କହିଥିଲେ, ତମ ବୟସ ଅଠର। ମୋର ଅଠେଇଶ। କ୍ଷମା କର ପ୍ରାଚୀ, ମୁଁ ତମ ଉପରେ ଅତ୍ୟାଚାର କରିବା ପାଇଁ ଲଜ୍ଜା ବୋଧ କରେ। ଶୋଇପଡ଼, ତୁମେ କ୍ଲାନ୍ତ ହୋଇଛ। ମୁଁ ବାହାରେ ଶୋଇବି।"[7]

(तुम्हारी उम्र क्या है?

सरलता से प्राची प्रभा ने उत्तर दिआ "पंद्रह"

छिः, तुम एक छोटी बच्ची हो बोल कर मुझे पता होता मैंने तुम्हें स्पर्श भी नहीं किया होता। तुम्हारे मौसाजी ने कहा था तुम्हारा उम्र अठारह है। मेरा अठाईस। मुझे माफ कर दो प्राची , मैं तुम्हारे ऊपर अत्याचार करने से लज्जा अनुभव कर रहा हूं। तुम सो जाओ, थकी हुई हो। मैं बाहर सोऊंगा।)

उसके बाद बस एक चिट्ठी छोड़ कर प्राची का पति जगन्नाथ कहां चला गया किसी को पता नहीं। उसके प्रतिक्षा में प्राची का जीवन बीत गया। न वह विवाहित हो पाई न ही अविवाहित।

"अनमेल विवाह नारी दासता और शोषण का एक और रूप प्रकट करता है। यह एक भयानक सामाजिक कुरीति है। नारी हमारे समाज में शताब्दियों से परतंत्र रही है। इसलिए अनमेल विवाह का शिकार भी वही होती है। किशोरावस्था की लड़कियों का विवाह वृद्ध पुरुषों से कर दिया जाता है। हमारे समाज में ऐसे उदाहरण बहुत कम मिलते हैं, जहाँ वृद्ध या अधेड़ औरत किसी किशोर युवक से उसकी इच्छा के प्रतिकूल शादी करती है।"[8]

किशोरी मन की अधिरता

अपने पिता की कठोर शासन में बढ़ती हुई मक्षि जब शहरी बाबू को देखती हैं किशोरी मन में हलचल मचने लगता है । पिता का कठोर निर्देश भी इसे रोक नहीं पाता । उसके मीठी–मीठी बातों में खो जाती है और अपने आप को समर्पित कर देती है । इसके लिए उसमें कोई पछतावा नहीं था अपराध बोध नहीं था। उसने तो मन के स्वाभाविक आमंत्रण को स्वीकार किया था, निश्छल मन से प्रेम किया था। इसमें लज्जा कैसी या अपराध बोध किस बात का। उसके भावनाओं के साथ छल तो उस शहरी सभ्य बाबू ने किया था। उसके निश्छल प्रेम के के बदले अपने भीतर के हवस को मिटाया था। इन शहरी कपटता से दूर मक्षि ने तो केवल प्रेम किया था।

तेरहवीं शताब्दी की चंद्रभागा, रूढ़िवादी संस्कारों में बंधी हुई चंद्रभागा एक विवाहित किशोरी होते हुए भी अविवाहित थी। उसने कभी अपने पति का मुख नहीं देखा था। उसके ससुराल पहुंचने से पहले ही पति कोणार्क के सूर्य मंदिर निर्माण के लिए निकल चुका था। जब राजा नरसिंह देव ने उसे दो बार निश्चित मृत्यु के मुख से बचाया उनकी प्रशस्त छाती और सबल बाहू का आश्रय पा कर उसके किशोरी मन में भी हलचल मची थी। इसी तारणकर्ता का स्पर्श ही उसके लिए प्रथम पुरुष स्पर्श था। उसने उन्हीं के छवि से अपने पति की कल्पना की थी। परंतु स्व–संस्कारों में बंधी हुई विवाहिता नारी अपने आप को संयत कर लेती थी ।

"ତମକୁ ଦେଖି ହିଁ ମୁଁ ବୁଝିଛି ପୁରୁଷ କିଏ, କେମିତି ତାର ରୂପ, କେତେ ତାର ଶକ୍ତି, କିପରି ତାର ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ୱ। ତମେ ହିଁ ତ ମୋ ସମ୍ମୁଖ ରେ ପ୍ରଥମ ପୁରୁଷ ରୂପେ ଆବିର୍ଭାବ ହୋଇଛ। କାରଣ ମୋ ସ୍ୱାମୀଙ୍କୁ ମୁଁ ଦେଖି ନାହିଁ।"[9]

(आपको देखकर ही मैंने समझा है पुरुष कौन है, कैसा उसका रूप, कितनी उसकी शक्ति, कैसा उसका व्यक्तित्व। आप मेरे सामने प्रथम पुरुष के रूप में आविर्भूत हुए हैं कारण मैंने अपने पति को कभी देखा नहीं है।)

कोणार्क मंदिर के मुख्य शिल्पी के मूर्तियों के लिए काल्पनिक प्रतिरूप बनी शिल्पा जब पहली बार मुख्य शिल्पी को देखती है अपना किशोरी मन दे बैठती है।

"କମଳ ମହାରଣା କଳ୍ପନାର ନାୟିକା କୁ ମୁକ୍ତି ଦାନ କଲାବେଳେ ସେଇ ରୂପାମୟୀ କିଶୋରୀର ମନ ପ୍ରାଣ ଅନ୍ତରାତ୍ମା ତରୁଣ, ସୌମ୍ୟଦର୍ଶନ ଶିଳ୍ପୀର ତୀକ୍ଷଣ ଅନ୍ତର୍ଭେଦୀ ଦୃଷ୍ଟି ପାଖରେ ବନ୍ଧା ପଡ଼ି ଯାଇଥିଲା।"[0]

(कमल महारणा जब कल्पना की नायिका को मुक्तिदान कर रहा था उसी किशोरी का मन प्राण अंतरात्मा, सौम्यदर्शन शिल्पी की तीक्ष्ण अन्तर्भेदी दृष्टि में खो गया।)

उसे पता था वह वाकदत्ता है । अब उसके लिए किसी और का ध्यान भी पाप है पर वह पिता का दृढ़ विरोध करते हुए अपने मन की बात सामने रखती है।

"ମୋ ହୃଦୟ ରେ ଜଣେ ମାତ୍ର ଦେବତା ଏବେ ପୂଜା ପାଉଛନ୍ତି। ସେଠି ଆଉ କାହାରି ସ୍ଥାନ ନାହିଁ। ଶିଳ୍ପୀ ର ପୂଜା କରି ଧନ୍ୟ ହେବ କୁ ଚାହେଁ। ଏଥିରେ ଅପରାଧ କଣ? ୩୩. ଆପଣଙ୍କ ଆଦର୍ଶ ରେ ଅନୁପ୍ରାଣିତ ହୋଇ ମୁଁ କଳା କୁ ପ୍ରେମ କରିଥିଲି। ସେତେବେଳେ ଭୁଲି ଯାଇଥିଲି ମୁଁ ଝିଅ ଟିଏ।"[1]

(अभी मेरे हृदय में बस एक ही देवता पूजा पा रहे हैं। वहां और किसी का भी स्थान नहीं है। शिल्पी की पूजा कर के शिल्पा धन्य होना चाहती है। इसमें क्या अपराध है?..... आपके ही आदर्श रे अनुप्राणित हो कर मैने कला से प्रेम किया था। तब भूल गई थी कि मैं एक लड़की हूं।)

इस अपराध के कारण उसे अपने परिवार से दूर भेज दिया गया। कारण पिता अपने मनोनीत वर के सामने पुत्री के भावनाओं को स्वीकार कर के अपमानित होना नहीं चाहते थे। पिता के सम्मान की रक्षा के लिए जबरदस्ती पुत्री को बलिदान देना पड़ा। भावी ससुराल खबर पहुंची सर्पदंशन से पुत्री की मृत्यु हो गई और पुत्री को सुवर्ण द्वीप निर्वासित कर दिया गया। कुल के सम्मान का भर तो नारी के ऊपर ही तो होती है।

किशोरी मन में पुरुष के प्रति प्रेम भावनाओं का जन्म लेना स्वाभाविक है। परन्तु हमारा समाज उसे नैतिकता के बंधन में बांध कर इस स्वर्गीय अनुभूति के सुखलाभ से भी वंचित कर देते हैं।

समाज के संस्कारो के बंधनों से बंधी हुई नारी

हमारे समाज में नियम बहुत सारे हैं। अधिकांश नियम नारियों के लिए है, पुरुष के लिए बने नियमों को वो मानने के लिए बाध्य नहीं है, बाध्य है तो नारी। संस्कार के नाम पर नारियों को बहुत से बंधनों का सामना करना पड़ता है। परिवार में कुछ भी संकट हो दोष लड़की का ही होता है। जिस दिन चंद्रभागा को पहली बार अपने ससुराल पहुंचना था उसके बारह दिन पहले ही उसके पति कमल महारणा को सूर्य मंदिर बनाने के लिए कोणार्क जाना पड़ा। इसके कारण सास के तानों का मार चंद्रभागा को ही सहना पड़ा। सास की शिकायत थी वह कुलटा है, कुलक्षिणी है इसीलिए घर में पाव रखने से पहले ही पति को घर छोड़ना पड़ा, सारे सुखों से वंचित रहना पड़ा। इसीलिए बहू पर अत्याचार करती रही। बहुत बड़े गागर में पानी भर के ले कर जाने के लिए आई और पानी निकलते तमय कुएँ में गिरती चन्द्रभागा को बचाने के बाद आश्चर्य से राजा नरसिंह देव उससे पूछते है कि इतने बड़े गागर में वो पानी कैसे लेकर जाएगी तो वो बताती है देवर उसकी मदद करता है। सास का यही निर्देश है बता है। चन्द्रभागा राजा नरसिंह देव को अपनी स्थिति बताते हुए कहती है

"୩.. ସେଇଥିରୁ ପାଣି ଢାଳି ମୁଁ ଘର ଲିପେ। ଶାଶୁ କିଛି ଜାଣି ପାରନ୍ତି ନାହିଁ। ମତେ କଷ୍ଟ ଦେଉଛନ୍ତି ଭାବି ସୁଖ ପାଆନ୍ତି।"

(..इसी से पानी ढाल कर घर लिपती हूं। सास को पता नहीं चलता। मुझे कष्ट दे रही हैं सोच कर खुश होती है।)

इस अत्याचार का कारण बताते हुए वह कहती है

"...ମୋ ସ୍ୱାମୀଙ୍କୁ ଦେଖି ନାହିଁ। ସେଥିପାଇଁ ମୋ ଶାଶୁଙ୍କ ଦୃଷ୍ଟି ରେ ମୁଁ ସୁଲକ୍ଷଣା ନୁହେଁ। ପୁଣି ମୋ ଅପରାଧ ରୁ ଶାଶୁ କୁଆଡେ ନାତି ମୁହଁ ନ ଦେଖି ଆଖି ବୁଜିବେ। ସତ କୁ ସତ ସେ ଭାଙ୍ଗି ପଡ଼ିଲେଣି, ତାଙ୍କର ଆଉ କେତେ ଦିନ?..... ଝିଅ ମାନଙ୍କ ଲକ୍ଷଣ ନେଇ ଘରର ସୁଖଦୁଃଖ ହ୍ରସବୃଦ୍ଧି ହୋଇଥାଏ"[3]

(मैने अपने पति का मुंह नहीं देखा । इसीलिए सास के नजरों में मैं सुलक्षिणी नहीं हूं। फिर मेरे ही अपराध के कारण कहां वो पोते का मुंह देखे बिना ही मर जाएंगी। सच ही तो है, कमजोर होती जा रहीं हैं वो।३३.. लड़कियों के लक्षण से घर के सुख दुख घटते बढ़ते हैं।)

जब चंद्रभागा के सास को पता चला देवर उसकी मदद कर रहा है उसे मायका वापस भेज दिया गया। वहां भी वह भाई–भाभी के परिवार में बोझ मानी जाने लगी। विवाहित बेटी की मायके में भी तब स्वागत की जाती है जब वह ससुराल में खुशी से हो, ससुराल में दुखी या प्रताड़ित बेटी का मायके में भी अवहेलना ही होती है। यह अवहेलना और असम्मान असह्य हो जाने पर चंद्रभागा आत्महत्या करने के लिए रात के अंधेरे में निकल पड़ी थी।

पढ़ी–लिखी प्राचीतारा भी इन्हीं संस्कारों के कारण चार्ल्स के प्रति भावनाओं को खुले मन से ग्रहण नहीं कर पा रही थी। पंद्रह सालों से अपने पति की राह देख रही थी यह जानते हुए कि वह वापस नहीं आएगा।वो पति जिसके साथ सान्निध्य का अनुभव हो उस से पहले ही वह साथ छोड़ के चला गया। पर दूसरे पुरुष के प्रति भावनाओं को स्वीकार करने की अनुमति उसे नहीं थी। अगर वह पुरुष होती तो खोये हुए पति तो क्या पत्नी के उपस्थिति में भी प्रेमिका से विवाह कर पाती।

प्राची की मौसेरी बहन अनुपमा की शादी एक डॉक्टर से हुई थी। कुछ दिन बाद अपनी प्रेमिका से शादी करनी है कह कर पति ने उसे मायके वापस भेजना चाहा । पर ये अपमान अनुपमा बर्दाश्त नहीं कर पाई और उसने आत्महत्या कर ली। वापस आ जाती तो समाज उसी को ही दोष देता। जिसने उसका जीवन नष्ट किया उसे कुछ नहीं कहता कारण वह पुरुष है। दोष तो केवल नारी का ही होता है।

वैसे तो सामाजिक नियम नारी और पुरुष दोनों के लिए है परंतु "स्त्रियों के लिए धार्मिक संस्कारों के बंधन निर्मित किए गए, कुमारी अवस्था से लेकर मृत्यु पर्यन्त उसकी स्वतंत्रता का अपहरण कर उसे अधीन रहने के लिए विवश किया गया, धार्मिक सामाजिक और आचरण मूलक संस्कारों के बंधनों में जकड़ दिया गया। विवाह एक ऐसा ही संस्कार है जिसकी आवश्यकता का विधान तो स्त्री पुरुष दोनों के लिए है लेकिन जिसका एकदम भिन्न व्यवहार मूलक स्वरूप है केवल स्त्री के लिए।"[4]

परिवार, समाज तथा देश के लिए प्रेम, त्याग और उत्सर्ग के भावना में लीन नारी

'परिचय' उपन्यास में जब मक्षी को शहर के एक मेम साहब के घर उनके बच्चे को अपना दूध पिलाने की नौकरी मिली घर में अपने दुधमुंहे बच्चे को छोड़ उसके भविष्य के लिए पति से, मालकिन से ताने सुनते हुए, अपने बच्चे को भूख से तड़पते छोड़, शारीरिक और मानसिक कष्ट सहते हुए भी नौकरी करती है। कारण एक ही था, खुद को चाहे जितना कष्ट हो परे बच्चे का भविष्य सुखी हो। अपने बच्चे को एक उज्ज्वल भविष्य देने के लिए वह दिन रात कष्ट सहती रही।

पति जग्गू के नफरत के बावजूद जब वह चोटिल हो जाता है आठ महीने की तनख्वा एडवांस में ले लेती है जिसकी उसे बहुत बड़ी कीमत चुकनी पड़ती है।

अपने पिता के घृणा के बावजूद छिप कर उसको देखने रोज अस्पताल जाती है । इलाज का पूरा ब्यौरा लेती है।

'शिलापद्म' उपन्यास के चंद्रभागा देश और जाति के सम्मान के लिए अपने दुखों को सहने के लिए तैयार थी। छद्मवेशी राजा नरसिंह देव ने उसके कष्टों को सुनकर जब पति को वापस भेजने की बात कही तो वो चौंक गई। कहा

"ଯଦି ବାରଶହ ଶିଳ୍ପୀବଧୂ ଏଇ କଥା ଚାହିଁବେ, ତେବେ ମନ୍ଦିର ନିର୍ମାଣ ହେବ କେମିତି? ବିଶ୍ୱବିଖ୍ୟାତ ସୂର୍ଯ୍ୟ ମନ୍ଦିର ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ହେଲେ ଉତ୍କଳର ଶିଳ୍ପକଳା କାଳ କାଳ କୁ ବିରାଜିତ ହେବ। ମୋ ସ୍ୱାମୀଙ୍କ କୀର୍ତ୍ତି ଆମର ଅକ୍ଷର ରେ କୋଣାର୍କ ଦେହରେ ଲେଖା ହୋଇ ରହିବ। ୩.ପ୍ରତ୍ୟେକ ସ୍ତ୍ରୀ ଚାହେଁ ତା ସ୍ୱାମୀ ହେଉ ଅମର, ଅଜର। ମୁଁ ସେଥିରୁ ବାହାରି ଯିବି କିପରି? ମୋର ତ ସେଠି ଆନନ୍ଦ।"[5]

(अगर बारह सो शिल्पी–बधू यही चाहेंगी तो सूर्य मंदिर बनेगा कैसे । विश्वविख्यात सूर्य मंदिर संपूर्ण होगा तब उत्कल की शिल्पकला सदियों तक अमर होगी। मेरे पति का यश अमर अक्षरों में कोणार्क में लिखे जाएंगे।३३ हर पत्नी चाहती है उसका पति अमर हो, मैं भी। वही मेरी खुशी है।)

कुशभद्रा मौसी हृदय के प्रेम के कारण विदेशी चार्ल्स को बेटा बना लेती है तो फूल बेचने वाली चित्रा उसे भाई बना लेती है। धर्मानंद प्राची का बेटा बन जाता है। प्रतिभा जी ने नारी के भीतर के इन मानवीय मूल्यों को बहुत ही निपुणता के साथ अपने उपन्यास में उतारा है।

आत्मसम्मान की रक्षा करती नारी

नारी सबके लिए तो अपने आप को समर्पित कर देती है। पर बात जब अपने आत्म सम्मान की आता है तो वह अपने सामने किसी को नहीं देखती। अत्याचार से जब कोई नहीं टूटता तो वह और भी ज्यादा मजबूत हो जाता है।यही होता है नारी के साथ। नव दुर्गा का चंडी रूप अपने स्वाभिमान की रक्षा करते हुए निकलता है। उस समय अपने आत्मसम्मान के रक्षा के लिए वह किसी के ऊपर निर्भर नहीं रहती। हमारे संस्कृति में शक्ति का स्वरूप नारी है शक्ति का केंद्र है नारी। परन्तु समाज में उसे सबसे दुर्बल के रूप में व्यवहार मिलता है। और बहुत जगह वह यह मान भी लेती है। शक्ति स्वरूप नारिंको धरती जैसी सर्वसंहा बता कर उसके ऊर्जा को दमित कर दिया जाता है। परन्तु यह दमित ऊर्जा जब स्फूरित होती है सबकुछ भस्म कर देती है चाहे उसकी प्रचंडता दिखाई दे या न दे।

'परिचय' उपन्यास के अंत में मक्षि अपने बेटे को पिता के पहचान और सुरक्षित भविष्य के बदले कुछ भी करने को तैयार हो जाती है। पर जब 'बाबू' पिता के पहचान के लिए मना करता है उसके भीतर का पशु बाहर आकर मक्षि के ऊपर झपटता है। अपनी पूरी ताकत लगाकर उसे झटक देती है। उस तूफानी रात में उस जानवर से खुद को बचाते हुए दौड़ती जाती है एक तूफान प्रकृति की उमड़ी थी एक तूफान उसके अंदर चल रही थी, अपने 'परिचय' का अपने बेटे मनु के परिचय का। उस तूफानी बरसात ने अंत में सारे मेल को धो कर साफ कर दिया। मक्षि ने घोषणा की, "ମୋ ପରିଚୟ ମୁଁ ନିଜେ, ୩ ମୋର କର୍ମ, କର୍ତ୍ତବ୍ୟ,ଚରିତ୍ର ହିଁ ମୋ ଜାତି"[16] (मैं स्वयं मेरा परिचय हूं३३ मेरा कर्म, कर्तव्य,चरित्र मेरी जाति है..) किशोरी अवस्था की जो बची कूची भावना 'बाबू' के लिए मन में थी वह भी उस झटके के साथ छिटक जाती है। उस से बचने के लिए दौड़ते हुए उन किशोर भावनाओं से खुदको मुक्त कर लेती है। जिसने उसके इच्छा के विरुद्ध कभी नहीं उसके ऊपर अधिकार नहीं जमाया, उसे उसका सम्मान और गरिमा देता रहा, अधिकार होते हुए भी दूरी बनाए रखी थी उसी के प्रेम को स्वीकार लिया। कारण वहां सम्मान था। जन्म डाटा का परिचय बंद लिफाफे में ही उफनती नदी के धर में बह गई नवघन ही पिता बना रहा कारण जन्मदाता ने संपत्ति तो छोड़ रखी थी पर सम्मान नहीं। उसे सम्मान और प्रेम का जीवन चाहिए चाहे गरीबी ही क्यों न हो। मक्षि के नजर में स्त्री –पुरुष एक दूसरे को पूरा करते है, निर्मल

हृदय से सम्मान के साथ अगर ग्रहण करें तब जीवन सफल होता है।

चंद्रभागा ने बारह वर्षों के प्रतीक्षा के बाद अपने सामने पति को पा कर भी अपना परिचय छुपा कर रखा, मृत्यु को वरण कर लिया। कारण निर्दोष होते हुए भी उसे घर से जाना पड़ा, घर से बाहर रहने के कारण उसे कुलवधु का सम्मान नहीं मिलता। जिसके इंतजार में जिंदगी बिता दी उसका साथ मिलने का समय आ गया था, परन्तु जिस सम्मान पर उसका अधिकार है वह सम्मान नहीं मिलता। राजा नरसिंह देव को पहचान लेने के बाद भी अपने आप को निर्दोष जान लेने के बाद भी चंद्रभागा ने घर वापस जाना स्वीकार नहीं किया। राजा के साक्ष्य पर पति शायद उसे अपना लेते परन्तु मन में वह निर्मल प्रेम, विश्वास और आंखों में सम्मान का भाव नहीं रहता। उसे ऐसा जीवन स्वीकार्य नहीं था। वह अकेली अपना गुजारा कर लेगी पर जहां उसके लिए सबके आंखों में घृणा भाव हो निर्दोष होते हुए भी दोषी का जीवन जीना पड़े, दबी शब्दों में चरित्र पर संदेह हो, वहां जाना नहीं चाहेगी। दाने दाने के लिए वह संघर्ष कर सकती है पर स्वाभिमान पर आक्षेप नहीं, आत्मसम्मान के लिए उसका अपना संघर्ष था।

परिवार समाज की नींव है और यह नींव तभी तक सुदृढ़ रहेगी जब तक पति–पत्नी के मध्य प्रेम, विश्वास, माधुर्य और पारस्परिक सम्मान की भावना रहेगी। परिवार और विवाह संस्था को बनाए रखने की जितनी जिम्मेदारी पत्नी की है, उतनी ही पति की भी है– "विवाह संस्था को बनाए रखने में स्त्री–पुरुष दोनों का समान दायित्व है। माता–पिता के रूप में, पति–पत्नी के रूप में जीवन की सार्थकता तभी संभव है जहाँ स्त्री और पुरुष एक दूसरे के साथ मिलकर सहयोग दें, परस्पर आत्मसम्मान के साथ जियें।" परिवार में नारी को उचित सम्मान मिलेगा तो समाज में भी नारी को उसका स्थान मिलेगा।

नारी के अनेक रूपों को इन दोनों उपन्यासों में दिखाया गया है। ये सारे रूप समाज में हर कोने में फैले हुए हैं कहीं नारी त्यागमयी है तो कहीं अत्याचारिणी। कभी प्रेममयी है तो कभी अहंकरिणी। कभी सर्विसंहा है तो कहीं विद्रोहिणी। इन उपन्यासों में छोटे बड़े पात्रों के माध्यम से इन सारे रूपों को यथार्थ रूप में दिखाया गया है।

सन्दर्भ

1. स्त्री लेखन – के. बनजा (सं)– लेख– रोहिणी अग्रवाल –पृ. 157 अनुजा बुक्स शहादरा दिल्ली–३२ प्रथम संस्करण २०१७
2. वही लेख– चित्र मुद्गल – पृ 16
3. बाणभट्ट की आत्मकथा – आ. हजारीप्रसाद द्विबेदी पृ. 146, 24वां. संस्करण 2024
4. परिचय – डॉ. प्रतिभा राय – पृ. 22
5. वही पृ .–23
6. 'शिलापद्म'– डॉ. प्रतिभा राय – पृ. 240
7. वही पृ. 251
8. हिन्दी उपन्यास सामाजिक चेतना – डॉ कुंबरपाल सिंह – पृ. ५३, पाण्डुलिपि प्रकासन दिल्ली–51– प्रथम संस्करण1976
9. 'शिलापद्म'– डॉ. प्रतिभा राय – पृ.147
10. वही – पृ. 176
11. वही – पृ.177, 180
12. वही – पृ.118
13. वही – पृ.119
14. स्त्री सन्दर्भ में महादेवी वर्मा – सुधा सिंह – पृ.86 अनामिका पब्लिशर्स नई दिल्ली – 2, प्रथम संस्करण
15. 'शिलापद्म'– डॉ. प्रतिभा राय – पृ.120
16. 'परिचय' – डॉ. प्रतिभा राय – पृ.166
17. स्त्री विमर्शरू भारतीय परिप्रेक्ष दृ डॉ के ऍम मालती पृ. 76, वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली 2, प्रथम संस्करण 2010
18. आधार ग्रन्थ:
19. परिचय– डॉ प्रतिभा राय– आद्या प्रकाशन कटक
20. 'शिलापद्म'– डॉ. प्रतिभा राय– आद्या प्रकाशन कटक
21. प्रतिभ रायंक उपन्यास रे नारी चरित्र– डॉ उषारानी रथ – साहित्य स्वेतापद्मा, भुबनेष्वर
22. ओडिया साहित्य रे नारी प्रतिभा – डॉ. साबित्री राउत– अर्चना प्रेस कटक
23. ओडिया उपन्यास साहित्य र परिचय– पठानी पट्टनायक– ओडिशा बुक स्टोर कटक 2
24. स्त्री लेखन – के. बनजा (सं) – अनुजा बुक्स शहादरा दिल्ली–३२ प्रथम संस्करण २०१७
25. हिन्दी उपन्यास सामाजिक चेतना – डॉ कुंबरपाल सिंह– पाण्डुलिपि प्रकासन दिल्ली–51– प्रथम संस्करण 1976
26. स्त्री सन्दर्भ में महादेवी वर्मा – सुधा सिंह– अनामिका पब्लिशर्स नई दिल्ली – 2, प्रथम संस्करण
27. अपनी माटी– (सं) माणिक एबम जीतेन्द्र यादव – लेख डॉ. राजेश कुमारी कौशिक – मार्च 2023 संस्करण